

धर्म की आड़

~ गणेशशंकर विद्यार्थी

प्रश्न उत्तर

मौखिक

निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए -

प्रश्न 1. आज धर्म के नाम पर क्या-क्या हो रहा है?

उत्तर : आज धर्म के नाम पर दंगे-फ़साद हो रहे हैं ।

प्रश्न 2. धर्म के व्यापार को रोकने के लिए क्या उद्योग होना चाहिए?

उत्तर : धर्म के व्यापार को रोकने के लिए साहस और दृढ़ता के साथ उद्योग होना चाहिए।

प्रश्न 3. लेखक के अनुसार स्वाधीनता आंदोलन का कौन सा दिन बुरा था?

उत्तर : लेखक के अनुसार स्वाधीनता आंदोलन का वह दिन सबसे बुरा था जिस दिन स्वाधीनता के क्षेत्र में खिलाफत, मुल्ला मौलवियों और धर्माचार्यों को स्थान दिया जाना आवश्यक समझा गया।

प्रश्न 4. साधारण से साधारण आदमी तक के दिल में क्या बात अच्छी तरह घर कर बैठी है?

उत्तर : साधारण से साधारण आदमी तक के दिल में यह बात अच्छी तरह घर कर बैठी है कि धर्म और ईमान की रक्षा के लिए जान तक दे देना उचित है।

5. धर्म के स्पष्ट चिह्न क्या हैं?

उत्तर : शुद्ध आचरण और सदाचार धर्म के स्पष्ट चिह्न हैं।

लिखित

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) दीजिए -

प्रश्न 1. चलते-पुरज़े लोग धर्म के नाम पर क्या करते हैं?

उत्तर : चलते-पुरज़े लोग धर्म के नाम पर लोगों को मूर्ख बनाते हैं और अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं, लोगों की शक्तियाँ और उनके उत्साह का दुरुपयोग करते हैं। वे इन जाहिलों के बल पर अपना नेतृत्व और बड़प्पन कायम रखते हैं।

प्रश्न 2. चालाक लोग साधारण आदमी की किस अवस्था का लाभ उठाते हैं?

उत्तर : चालाक लोग साधारण आदमी की धर्म की रक्षा के लिए जान लेने और देने वाले विचार और अज्ञानता का लाभ उठाते हैं। पहले वो अपना प्रभुत्व स्थापित करते हैं उसके बाद स्वार्थ सिद्धि के लिए लोगों की धर्म के प्रति आस्था का लाभ उठाते हैं ।

प्रश्न 3. आने वाला समय किस प्रकार के धर्म को नहीं टिकने देगा?

उत्तर : दो घंटे तक बैठकर पूजा कीजिये और पंच-वक्ता नमाज़ भी अदा कीजिए, परन्तु ईश्वर को इस प्रकार के रिश्वत दे चुकने के पश्चात, यदि आप दिन-भर बेईमानी करने और दूसरों को तकलीफ पहुँचाने के लिए आजाद हैं तो इस धर्म को आने वाला समय नहीं टिकने देगा।

प्रश्न 4. कौन सा कार्य देश की स्वाधीनता के विरुद्ध समझा जायेगा?

उत्तर : यदि किसी धर्म के मानने वाले कहीं दूसरों के धर्म में जबरदस्ती टांग अड़ाते हैं तो यह कार्य देश की स्वाधीनता के विरुद्ध समझा जाएगा।

प्रश्न 5. पाश्चात्य देशों में धनी और निर्धन लोगों में क्या अंतर है?

उत्तर : पाश्चात्य देशों में धनी और निर्धन लोगों के बीच एक गहरी खाई है। गरीबों के कमाई से वे और अमीर बनते जा रहे हैं और उसी के बल से यह प्रयत्न करते हैं कि गरीब और अधिक चूसा जाता रहे। वे गरीबों को धन दिखाकर अपने वश में करते हैं और फिर मनमाना धन पैदा करने के लिए जोत

देते हैं। वहीं गरीब लोग झोंपड़ी में रहते हैं और अपना पेट भरने के लिए निरंतर संघर्ष करते रहते हैं।

प्रश्न 6. कौन-से लोग धार्मिक लोगों से ज्यादा अच्छे हैं?

उत्तर : धार्मिक लोगों से वे ला-मज़हबी और नास्तिक लोग ज्यादा अच्छे हैं जिनका आचरण अच्छा है, जो दूसरों के सुख-दुख का खयाल रखते हैं और जो मूर्खों को किसी स्वार्थ-सिद्धि के लिए उकसाना बहुत बुरा समझते हैं।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) दीजिए -

प्रश्न 1. धर्म और ईमान के नाम पर किए जाने वाले भीषण व्यापार को कैसे रोका जा सकता है?

उत्तर : चालाक लोग धर्म और ईमान के नाम पर सामान्य लोगों को बहला फुसला कर उनका शोषण करते हैं तथा अपने स्वार्थ की पूर्ति करते हैं। मूर्ख लोग धर्म की दुहाई देकर अपने जान की बाजियाँ लगते हैं और धूर्त लोगों का बल बढ़ाते हैं। इस प्रकार धर्म की आड़ में एक व्यापार जैसा चल रहा है। इसे रोकने के लिए साहस और दृढ़ता के साथ मजबूत उद्योग होना चाहिए।

प्रश्न 2. 'बुद्धि पर मार' के संबंध में लेखक के क्या विचार हैं?

उत्तर : 'बुद्धि पर मार' का अर्थ है कि बुद्धि पर पर्दा डालकर पहले आत्मा और ईश्वर का स्थान अपने लिए लेना और फिर धर्म, ईमान ईश्वर और आत्मा के नाम पर अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए लोगों को लड़ाना-भिड़ाना।

प्रश्न 3. लेखक की दृष्टि में धर्म की भावना कैसी होनी चाहिए?

उत्तर : लेखक की दृष्टि में धर्म किसी दूसरे व्यक्ति की स्वाधीनता को छीनने का साधन ना बने। जिसका मन जिस प्रकार चाहे, उसी प्रकार के धर्म की भावना मन में होनी चाहिए। दो भिन्न धर्मों को मानने वालों के बीच में

टकरा जाने का कोई स्थान ना रहे। अगर कोई व्यक्ति दूसरे के धर्म में दखल दे तो इस कार्य को स्वाधीनता के विरुद्ध समझा जाये।

प्रश्न 4. महात्मा गांधी के धर्म सम्बन्धी विचारों पर प्रकाश डालिये।

उत्तर : महात्मा गाँधी अपने जीवन में धर्म को महत्वपूर्ण स्थान देते थे। वे सर्वत्र धर्म का पालन करते थे। धर्म के बिना एक पग भी चलने को तैयार नहीं होते थे। उनके धर्म के स्वरूप को समझना आवश्यक है। उनके लिए धर्म का अर्थ है - ऊँचे विचार और उदारता । वे धर्म की कट्टरता के विरोधी थे। प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह धर्म के स्वरूप को भलि-भाँति समझ ले।

प्रश्न 5. सबके कल्याण हेतु अपने आचरण को सुधारना क्यों आवश्यक है?

उत्तर : सबके कल्याण हेतु अपने आचरण को सुधारना इसलिए आवश्यक है क्योंकि जब तक हम खुद को ही नहीं सुधारेंगे, दूसरों के साथ अपना व्यवहार सही नहीं रख सकेंगे। समाज का कल्याण तभी संभव हो सकता है जब हम अपने स्वार्थ को छोड़कर कल्याण का कार्य करते हैं । इन सभी बातों के लिए आचरण में शुद्धता होना आवश्यक है

(ग) निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 1. उबल पड़ने वाले साधारण आदमी का इसमें केवल इतना ही दोष है कि वह कुछ भी नहीं समझता-बूझता और दूसरे लोग उसे जिधर जोत देते हैं, उधर जुत जाता है।

आशय - यहाँ लेखक का आशय इस बात से है कि साधारण लोग जो कि धर्म को ठीक से जानते तक नहीं, परन्तु धर्म के खिलाफ कुछ भी हो तो उबल पड़ते हैं। धर्म के नाम पर जान लेने और देने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं , चालाक लोग उनकी इसी मूर्खता का फायदा उठाकर अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए उनसे अपने ढंग से काम करवाते हैं।

प्रश्न 2. यहाँ है बुद्धि पर परदा डालकर पहले ईश्वर और आत्मा का स्थान अपने लिए लेना, और फिर धर्म, ईमान, ईश्वर और आत्मा के नाम पर अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए लोगों को लड़ाना-भिड़ाना।

आशय - धर्म, ईमान के नाम पर कोई भी साधारण आदमी आराम से चालाक व्यक्तियों की कठपुतली बन जाता है। वे पहले उनके बुद्धि पर परदा डाल देता है तथा उनकी ईश्वर और आत्मा का स्थान खुद ले लेता है। जब लोगों में उनके प्रति विश्वास पैदा हो जाता है वे अपनी कार्यसिद्धि के लिए उन्हें दूसरे धर्म वालों से लड़ाता-भिड़ाता रहता है।

प्रश्न 3. अब तो, आपका पूजा-पाठ न देखा जाएगा, आपकी भलमनसाहत की कसौटी केवल आपका आचरण होगी।

आशय - इस पंक्ति का आशय है कि आप चाहे दिन भर पूजा पाठ पढ़ें, नमाज अदा करें और गायत्री पढ़ लें तब भी आप उत्पात फैलाने के लिए आजाद नहीं हैं। आने वाले समय में केवल पूजा-पाठ को ही महत्व नहीं दिया जाएगा बल्कि आपके अच्छे व्यवहार को परखा जाएगा और उसे ही महत्व दिया जाएगा। मनुष्य की कसौटी उसकी मनुष्यता है ना कि धर्म। धर्म तो शुद्ध आचरण और सदाचार का मार्ग है, जिस पर चल कर ईश्वर की साधना की जा सकती है।

प्रश्न 4. तुम्हारे मानने ही से मेरा ईश्वरत्व कायम नहीं रहेगा, दया करके, मनुष्यत्व को मानो, पशु बनना छोड़ो और आदमी बनो !

आशय - ईश्वर द्वारा कथित इस वाक्य से लेखक कहना चाह रहा है कि जिस तरह से धर्म के नाम पर अत्याचार हो रहे हैं उसे देखकर ईश्वर को यह बतलाना पड़ेगा कि पूजा-पाठ छोड़कर अच्छे कर्मों की ओर ध्यान दो। तुम्हारे मानने या ना मानने से मेरा ईश्वरत्व कायम नहीं रहेगा। धर्म के नाम पर लड़ना-भिड़ना बंद करो। सत्य का आचरण अपनाते हुए इंसान बनो और दूसरों की सेवा करो।
